१. शिवाजी महाराज – जन्म के पूर्व का महाराष्ट्र

शिवाजी महाराज महान पुरुष थे । प्रतिवर्ष हम उनकी जयंती बड़ी धूमधाम और सम्मान के साथ मनाते हैं । तुम बच्चे तो उस दिन कितने प्रसन्न रहते हो ! उनके सुंदर-सुंदर गीत गाते हो, उनका यशगान करते हो । उनकी प्रतिमा को पुष्पहार अर्पित करते हो । बड़े उत्साह से 'शिवाजी महाराज की जय' बोलकर उनके नाम की जयजयकार करते हो । कौन थे ये शिवाजी महाराज ? ऐसे कौन-से महान कार्य उन्होंने किए हैं ?

शिवाजी महाराज का कालखंड मध्य युग का कालखंड था । उस समय सर्वत्र राजाओं का शासन था । कई राजा जनकल्याण की अपेक्षा अपने ही भोग-विलास में डूबे रहते थे किंतु उस समय ऐसे भी शासक हुए जिन्होंने प्रजाहित को सर्वोपरि मानकर राज्य चलाया । उत्तर में मुगल सम्राट अकबर, दक्षिण में विजयनगर के सम्राट कृष्णदेवराय अपने कल्याणकारी शासन के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हैं । इन्हीं राजाओं के साथ शिवाजी महाराज का नाम भी गौरव के साथ लिया जाता है ।

शिवाजी महाराज ने महाराष्ट्र में स्वराज्य की स्थापना की । 'स्वराज्य' का अर्थ है – अपना राज्य । शिवाजी महाराज के लगभग चार सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में स्वराज्य नहीं था । महाराष्ट्र का अधिकांश भाग अहमदनगर के निजामशाह तथा बीजापुर के आदिलशाह नामक सुलतानों ने आपस में बाँट लिया था । वे उदार मन के नहीं थे । वे प्रजा पर अत्याचार करते थे । उन दोनों सुलतानों में प्राणघाती शत्रुता थी । उनमें प्रायः युद्ध हुआ करते थे । इससे प्रजा की बड़ी दुर्दशा होती थी । प्रजा सुखी नहीं थी । सार्वजनिक रूप से उत्सव मनाने तथा पूजा करने में भी खतरा था । प्रजा को भरपेट भोजन नहीं मिलता था । रहने के स्थान भी सुरक्षित नहीं थे । चारों ओर अन्याय फैला हुआ था । महाराष्ट्र में यद्यपि स्थान-स्थान पर देशमुख, देशपांडे आदि जागीरदार थे परंतु प्रजा की ओर उनका कोई ध्यान नहीं था । देश के प्रति उनमें प्रेम की भावना नहीं थी । उनको केवल अपनी जागीरदारी और ओहदे से प्रेम था । जागीर को लेकर उनमें प्रायः झगड़े हुआ करते थे । वे आपस में लड़ते रहते थे । परिणामस्वरूप प्रजा की बड़ी दुर्दशा होती थी । इससे प्रजा बहुत त्रस्त हो चुकी थी । चारों ओर अराजकता फैली हुई थी ।

शिवाजी महाराज ने यह सब देखा । उन्होंने प्रजा को सुखी बनाने के उद्देश्य से स्वराज्य स्थापना का पावन कार्य अपने हाथों में लिया । झगड़ालू जागीरदारों को वे सही रास्ते पर ले आए । स्वराज्य प्राप्ति के लिए उन्होंने उनका उचित उपयोग करवा लिया । प्रजा पर अत्याचार करने वाली सत्ताओं से भी शिवाजी महाराज ने संघर्ष किया । अत्याचारी शासकों को पराजित किया । उन्होंने न्यायपूर्ण 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना की । यह स्वराज्य सभी जातियों और धर्मों के लोगों के लिए था । स्वराज्य में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था । शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य में हिंदू और मुसलमानों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया । उन्होंने सभी धर्मों के साधु-संतों का सम्मान किया । शिवाजी महाराज

के महान कार्य देखकर हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति मिलती है ।

शिवाजी महाराज से लगभग तीन-चार सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र में अनेक संत हुए । शिवाजी महाराज ने उनके कार्यों का स्वराज्य स्थापना के लिए उपयोग किया । उन कार्यों को हम अगले पाठ में पढ़ेंगे ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज का कालखंड .... युग का कालखंड था ।
(प्राचीन, मध्य, आधुनिक)

(आ) शिवाजी महाराज ने .... में स्वराज्य की स्थापना की ।
(महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश)

२. उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' स्तंभ	'ब' स्तंभ
(अ) विजयनगर का सम्राट	(१) निजामशाह
(आ) अहमदनगर का सुलतान	(२) आदिलशाह
(इ) बीजापुर का सुलतान	(३) कृष्णदेवराय
	(४) सम्राट अकबर

३. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) प्रजाहित में शासन करने वाले राजाओं के नाम लिखो ।

(आ) शिवाजी महाराज ने कौन-सा कार्य अपने हाथों में लिया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने किसके साथ संघर्ष किया ?

४. भिन्न शब्द पहचानो :

(अ) स्वराज्य, पराधीनता, स्वतंत्रता

(आ) जनता, प्रजा, राजा

उपक्रम

(अ) तुम अपनी कक्षा में शिवजयंती मनाओ ।

(आ) विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में ऐतिहासिक गीत, यशगान प्रस्तुत करो ।

68JHQK